उदारीकरण, हिन्दी कथा साहित्य और किसान जीवन

(सन्दर्भ : 1990 के बाद)

दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी),
दयालबाग़, आगरा के अन्तर्गत पीएच.डी. (हिन्दी)
उपाधि हेतु शोध प्रबन्ध की
रूपरेखा
सन् 2019

शोध निर्देशक | **शोधार्थी**

डॉ. दयाल प्यारी सिन्हा
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग, कला संकाय
डी.ई.आई.

ज्योति सिंह

विभागाध्यक्ष

प्रो. शर्मिला सक्सेना
हिन्दी विभाग, कला संकाय,
डी.ई.आई.

कला संकाय प्रमुख

प्रो. जे. के. वर्मा

हिन्दी विभाग, कला संकाय,
दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़, आगरा – 282005

उदारीकरण, हिन्दी कथा साहित्य और किसान जीवन

(सन्दर्भ : 1990 के बाद)

शोध परिचय–

भूमण्डलीकरण वह प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से सम्पूर्ण विश्व की अर्थव्यवस्था को संसार की अर्थव्यवस्था के साथ एकीकृत किया जाता है। भूमण्डलीकरण का तात्पर्य विभिन्न देशों के बाजारों में बेची जाने वाली वस्तुओं में एकीकरण से है, जिससे विदेशी व्यापार की बढ़ती हुई प्रवृत्ति, उन्नत प्रौद्योगिकी की निकटता के कारण विश्व व्यापार को बढ़ावा मिलता है। सम्पूर्ण विश्व में परस्पर सहयोग एवं समन्वय से एक बाजार के रूप में कार्य करने की शक्ति को प्रोत्साहन मिलता है। भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया के तहत वस्तुओं एवं सेवाओं को एक देश से दूसरे देश में आने–जाने के अवरोधों को समाप्त कर दिया जाता है, जिससे विश्व के सभी देशों में वस्तुओं की कीमत लगभग समान रहती है। समस्त विश्व की अर्थव्यवस्था में सभी व्यापारिक क्रियाओं का अन्तर्राष्ट्रीयकरण ही भूमण्डलीकरण के स्वरूप का निर्धारण करता है। भूमण्डलीकरण के विकास की प्रक्रिया को शताब्दी के अन्तिम दशक (1990) से माना जाता है। भूमण्डलीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसके अन्तर्गत कुछ अन्य नीतियों का भी जन्म हुआ। निजीकरण एवं उदारीकरण भूमण्डलीकरण की ही देन हैं। वैश्वीकरण ने सम्पूर्ण विश्व को एक बाजार में खड़ा कर दिया। बाजार की वस्तुओं एवं सेवाओं को बेचने के लिए उदारीकरण के माध्यम से कंपनियों की सुविधा के लिए सरकार द्वारा कुछ नीतियाँ बनायी गयीं, जिससे कम्पनियों को अपना व्यापार करने में कठिनाई का सामना न करना पड़े इसी कारण सरकार द्वारा लाइसेंस, सब्सिडी आदि की नीतियों में लचीलापन लाया गया।

उदारीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है, जो सरकार के नियमों के लचीलेपन को सन्दर्भित करती है। इसकी शुरूआत 24 जुलाई 1991 ई० के बाद से हुई। उदारीकरण से तात्पर्य ऐसे नियमों में ढील देना या हटा लेना है, जिससे आर्थिक विकास को बढ़ावा मिले। इसके अन्तर्गत वे सारी क्रियाएँ सम्मिलित हैं, जिनके द्वारा किसी देश के आर्थिक विकास में बाधा पहुँचाने वाली आर्थिक

नीतियों, प्रशासनिक नियंत्रणों, प्रक्रियाओं इत्यादि को समाप्त कर दिया जाता है या उनमें शिथिलता दी जाती है।

1980 के दशक में अर्थव्यवस्था की नीतियों में बदलाव भारत में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन लेकर आया। उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण मॉडल को एल०पी०जी० मॉडल के रूप में भी जाना जाता है। इस मॉडल का मुख्य उद्‌देश्य विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के साथ भारत की अर्थव्यवस्था को तेजी से विकसित करना या दूसरी अर्थव्यवस्थाओं के निकट पहुँचना या उनसे भी आगे निकलना था। उदारीकरण एक नई आर्थिक नीति है, जिसके द्वारा देश में ऐसा आर्थिक वातावरण स्थापित करने का प्रयास किया जाता है, जिससे देश के व्यवसाय व उद्योग स्वतन्त्र रूप से विकसित हो सकें। उदारीकरण का उद्देश्य व्यवसाय तथा उद्योगों पर लगे प्रतिबन्धों को कम करना है, जिससे व्यापारियों तथा उद्यमियों को कार्य करने में किसी प्रकार की बाधा का सामना न करना पड़े। उदारीकरण ने व्यापार की दुनिया में एक ऐसा क्रान्तिकारी परिवर्तन किया, जिससे सभी देशों को विकास के अधिक अवसर मिल सकें। उदारीकरण ने 'लाइसेंस प्रणाली' को समाप्त कर दिया, जिससे व्यापार की दुनिया में वैश्विक स्तर पर परिवर्तन देखने को मिला। सरकार व्यापार की नीतियों को उदार बना रही है, जिससे विभिन्न देशों के बीच वस्तुओं और सेवाओं के आयात–निर्यात पर टैरिफ, सब्सिडी और अन्य प्रतिबन्धों को हटाया या रोका जा सके।

उदारीकरण एक नई सोच का उदाहरण भी है जिसके अन्तर्गत सरकार द्वारा आर्थिक क्रियाओं में न्यूनतम हस्तक्षेप किया जाता है। इस नीति के द्वारा वस्तुओं का उत्पादन बाजार की शक्ति पर निर्भर करता है। उस वस्तु की किस्म, मात्रा, मूल्य आदि सभी कुछ स्वयं बाजार तय करता है। उदारीकरण की सोच के पीछे विकसित देशों का भी हाथ है, जो खुले बाजार में प्रतियोगिता के माध्यम से अपना माल अल्पविकसित देशों के बाजार में बेचना चाहते हैं, जिससे वे आयात–निर्यात के प्रतिबन्धों को हटाकर अपने माल को ज्यादा से ज्यादा दूसरे देशों को बेच सकें। अल्पविकसित देशों में आर्थिक दबाव ने उदारीकरण की प्रक्रिया को और अधिक तीव्र किया है। उदारीकरण की प्रक्रिया ने केवल विश्व के किसी एक पक्ष को ही प्रभावित नहीं किया अपितु

इसने समाज के समस्त वर्गों को प्रभावित किया। उदारीकरण से समाज दो वर्गों में बँट गया– उद्योगपति और उपभोक्ता।

नई आर्थिक नीति का पहला शिकार देश की कृषि व्यवस्था हुई। कृषि क्षेत्र की सब्सिडी को वापस ले लिया गया और कृषि के आयातित उत्पादों की कीमत में वृद्धि हुई। इससे सीमांत और छोटे किसानों को झटका लगा और इसका दुष्परिणाम किसानों की शृंखलाबद्ध आत्महत्याओं के रूप में सामने आया। बाजार में खाद्यान्नों की कीमतों में गिरावट हुई, जिससे किसानों द्वारा बदली हुई परिस्थिति के अनुसार अपनी अर्थव्यवस्था को समायोजित करने पर विवश होना पड़ा कृषि मजदूरों की वास्तविक मजदूरी में गिरावट हुई। इससे अनुसूचित जातियों, जनजातियों और अन्य पिछड़े वर्ग की आर्थिक दशा पर प्रभाव पड़ा क्योंकि ये वर्ग कृषि क्षेत्र पर व्यापक रूप से निर्भर थे। परिणाम स्वरूप इन वर्गों के परिवारों की कुल वास्तविक आय में इन कारणों से गिरावट आयी– किसानों द्वारा कृषि रोजगार के अवसरों को छोड़ा गया, उपभोक्ता वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि हुई।

उदारीकरण ने समाज के हाशिए पर खड़े वर्गों को और अधिक उपेक्षित एवं तिरस्कृत किया। पूँजीपति एक बड़े वर्ग के रूप में उभरकर सामने आया तो मजदूर वर्ग उपेक्षित रहा। मजदूर वर्ग में समाज का एक बड़ा वर्ग समाहित है– किसान, मजदूर, आदिवासी, दलित, अल्पसंख्यक आदि। कृषि क्षेत्र में श्रम करने वाले वर्ग में ये वर्ग ही आते हैं, पर इन्हें श्रम के बदले पारिश्रमिक नाममात्र के लिए ही मिलता है। उदारीकरण के पश्चात् श्रमिकों की वास्तविक मजदूरी में या तो गिरावट आयी है या फिर मजदूरी निरतंर स्थिर बनी हुई है। बाजारीकरण के परिणामस्वरूप प्रत्येक वर्ग के रोजगार में भी गिरावट आई। आदिवासियों से उनका जंगल छीन लिया गया, हथकरघा बुनकरों का काम नई तकनीकी मशीनें करने लगीं, कृषि के परम्परागत तरीकों में भी परिवर्तन हुआ। हल–बैल के स्थान पर ट्रैक्टर का प्रयोग किया जाने लगा तथा कटाई–मड़ाई का कार्य मशीनें करने लगीं जिससे लोगों में रोजगार की कमी आयी और वे शहर की ओर विस्थापित होने के लिए मजबूर होने लगे। कृषक वर्ग शुरू से ही संघर्षशील एवं प्रयत्नरत रहा है। संघर्षों को झेलते हुए किसान मजबूरन आन्दोलन करने के लिए विवश हो गए। आमतौर

पर यह माना जाता है कि भारतीय समाज में समय–समय पर होने वाली उथल–पुथल में किसानों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है।

स्वतन्त्रता से पूर्व जितने भी किसान आन्दोलन हुए वे अंग्रेजो के खिलाफ थे। सन् 1857 के असफल विद्रोह के बाद विरोध का मोर्चा किसानों ने ही सम्भाला। अंग्रेजी और देशी रियासतों के विरुद्ध सबसे बड़े आन्दोलन उनके शोषण से पनपे थे। सन् 1859–60 के बीच 'नील आन्दोलन' हुआ। सन् 1873 ई० में पनामा यूसुफ सराय के किसानों ने मिलकर एक कृषक सभा का गठन किया। भारत में स्वतंन्त्रता आन्दोलन से पूर्व कुछ अन्य महत्वपूर्ण आन्दोलन हुए थे। जैसे– दक्कन का विद्रोह, कूका विद्राह, मोपला विद्रोह आदि।

स्वतंत्रता आन्दोलन के साथ ही किसानों ने भी अपना आन्दोलन जारी रखा। सन् 1917 में बिहार के मोतीहारी, चम्पारण तथा सन् 1918 ई० में गुजरात के खेड़ा के किसानों ने भी आन्दोलन कर दिया था। सन् 1920 ई० में गाँधी जी के असहयोग आन्दोलन के साथ अवध के किसानों ने भी आन्दोलन कर दिया था, जिससे पूरा अवध ही नहीं, अपितु पूरा देश प्रभावित हुआ था। सन् 1930 ई० में सविनय अवज्ञा आन्दोलन के साथ ही संयुक्त प्रान्त की किसान सभा का गठन किया गया, जिसकी पहली बैठक सन् 1956 ई० में हुई। किसान सभा की बैठक का मुख्य उद्देश्य था कि सम्पूर्ण देश के किसानों को संगठित करके स्वाधीनता आन्दोलनों के साथ ही किसान आन्दोलनों को चलाया जाए। सन् 1942 ई० में भारत छोड़ो आन्दोलन में भी भारत के किसान अग्रणी रहे। भारत छोड़ो आन्दोलन में 64 हजार व्यक्ति ब्रिटिश सरकार द्वारा बंदी बनाए गए, जिनमें सबसे अधिक संख्या में कृषक वर्ग ही था।

देश की तत्कालीन परिस्थितियों का प्रभाव हिन्दी–साहित्य पर भी दिखाई देता है। हिन्दी साहित्य में किसानों की दशा के वर्णन को देखा जाए तो मध्ययुग में तुलसीदास के समय से ही दिखाई देता है। 'कवितावली' की निम्न पंक्ति से समाज की तत्कालीन दशा का बोध होता है कि उस समय किसानों का जीवन कष्टप्रद था। तुलसीदास जी ने कहा है–

खेती न किसान को, बनिक को बनिज न, भिखारी को न भीख भलि।

आधुनिक युग में भारतेन्दु जी के साहित्य में भी किसानों के प्रति सहानुभूति और कृतज्ञता की भावना दिखाई देती है। भारतेन्दु वाराणसी में रहते थे इसलिए वे किसानों की कृषि उपज के उचित बाजार मूल्य के समर्थन में थे–

मरी बुलाऊँ देश उजाड़ू, महँगा करके अन्न

सबके ऊपर टिकस लगाऊँ धन मुझको धन्न

मुझे तुम सहज न जानो जी, मुझे राक्षस मानो जी।

किसानों की दीन–हीन दशा का वर्णन बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमधन' ने 'जीर्ण–जनपद' शीर्षक प्रबन्धकाव्य में किया है। इसमें किसानों के अभिशप्त जीवन की करुण झाँकी देखने को मिलती है। द्विवेदी युग में भी कवियों ने किसान जीवन के यथार्थ को विषय बनाकर रचनाएँ कीं। सनेही द्वारा लिखित 'दुखिया किसान' (सरस्वती, जनवरी 1912), मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित 'कृषक कथा' (सरस्वती, जनवरी 1915) और 'भारतीय कृषक' (सरस्वती, मई 1916) में किसानों की दयनीय दशा का चित्रण किया गया है। इस युग में दो प्रबन्धकाव्यों की रचना हुई। गयाप्रसाद शुक्ल 'स्नेही' कृत 'कृषक क्रन्दन' (1916) और मैथिलीशरण गुप्त द्वारा लिखित 'किसान' प्रबन्धकाव्यों के नायक किसान हैं। इनमें सूदखोरी, महाजनी व्यवस्था, पुलिस के अत्याचार तथा भूख से तड़पकर दम तोड़ने वाले किसान की दीन दशा का वर्णन किया गया है। छायावाद में निराला ने 'बादल राग' के माध्यम से दीन–हीन किसान की कहानी को सुनाया। प्रगतिवाद का स्वागत करते हुए सुमित्रानंदन पन्त ने 'युगान्त', 'युगवाणी' और 'ग्राम्या' की कविताओं में किसान जीवन की दशा को दिखाया। केदारनाथ अग्रवाल की 'धरती' और 'किसान स्तवन' रचनाओं में किसानों की स्थिति का चित्रण देखने को मिलता है। नागार्जुन की 'अकाल और उसके बाद' कविता में अकाल के बाद किसान दशा का जीवंत चित्रण किया गया है। इनके अतिरिक्त अन्य कवियों ने भी अपनी रचनाओं में किसान जीवन का चित्रण किया है। जैसे– प्रभाकर माचवे की 'गेहूँ की सोच' भवानी प्रसाद मिश्र कृत 'किसान का गीत', सर्वेश्वर दयाल सक्सेना द्वारा रचित 'कुआनो नदी', विजयदेव नारायण साही कृत 'रात में गाँव', अरुण कमल द्वारा रचित 'हांडी कालाहांड़ी', 'ऋतुराज' इत्यादि।

हिन्दी कथा साहित्य में समय–समय पर किसानों की दशा का चित्रण देखने को मिलता है। प्रेमचंद पूर्व युग में हिन्दी साहित्य में नाट्यविधा के अन्तर्गत किसानों की दशा का चित्रण हुआ है। दीनबन्धु का नीलविद्रोह से सम्बन्धित नाटक 'नील दर्पण' किसानों की विवशता एवं आक्रोश को प्रकट करता है। उड़ीसा के उपन्यासकार फकीर मोहन सेनापति द्वारा रचित 'छह माड़ आठ गुंठ' कृषक जीवन पर आधारित उपन्यास है। डॉ० नामवर सिंह ने इसे रूपक कहा है। प्रेमचंद युग में प्रेमचंद ने किसानों को अपने साहित्य का आधार बनाया और 'प्रेमाश्रम', 'कर्मभूमि' और 'गोदान' जैसे महागाथात्मक उपन्यासों की रचना की। ये उपन्यास किसान जीवन के विभिन्न पक्षों को चित्रित करते हैं। कृषि ही किसान जीवन की संस्कृति का मूलाधार है। प्रेमचंद ने कृषि व्यववस्था के कर्ता– धर्ता किसान को अपने उपन्यासों और कहानियों का मुख्य विषय बनाया। प्रेमचंद से पहले और बाद में आज तक किसी भी रचनाकार ने इतने विस्तार के साथ किसानों को आधार बनाकर लेखनी नहीं चलाई। 'पूस की रात', 'दो बैलों की कथा', 'बलिदान' तथा 'सवासेर गेहूँ' आदि किसान जीवन पर आधारित कहानियाँ हैं। इसी समय शिवपूजन सहाय का 'देहाती दुनिया' उपन्यास प्रकाशित हुआ। हालांकि यह उपन्यास आज से लगभग 90 वर्ष पूर्व लिखा गया था, किन्तु इस उपन्यास में वर्णित कृषक जीवन की समस्याएँ आज भी विद्यमान हैं। पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' की कहानी 'अभागा किसान' भी इसी समय लिखी गयी, जो कृषक जीवन की मार्मिक गाथा को प्रदर्शित करती है। प्रेमचंदोत्तर युग में रामजी लाल वैश्य ने 'सुघर गंवारिन', त्रिवेणी प्रसाद ने 'विसर्जन', जगदीश झा विमल ने 'गरीब' तथा इन्द्रविद्यावाचस्पति ने 'जमींदार' नामक उपन्यासों में किसान वर्ग की दुर्दशा का चित्रण किया। इन उपन्यासों में किसानों की दीन–हीन दशा एवं उनके जीवन के प्रत्येक पहलू को उजागर करने का सफल प्रयास किया गया है। श्रीनाथ सिंह की कहानी 'गरीबों का स्वर्ग' में भी ग्रामीण जीवन और किसानों की पीड़ा दिखाई देती है।

स्वातंत्र्योत्तर कथा साहित्य में प्रेमचंद की परम्परा को आगे बढ़ाने का कार्य फणीश्वर नाथ रेणु ने किया। उन्होंने 'मैला आँचल' एवं 'परती परिकथा' की रचना की, जिसमें ग्रामीण जीवन की झलक आँचलिक भाषा में देखने को मिलती है। नागार्जुन के 'बलचनमा' एवं भैरव प्रसाद गुप्त के

'सती मैया का चौरा' तथा 'गंगा मैया' उपन्यासों में जमींदारी प्रथा एवं किसान वर्ग की दयनीय स्थिति को उजागर किया गया है। रामदरश मिश्र के 'पानी के प्राचीर' में स्वतंत्रता प्राप्ति तक के भारतीय गाँव के किसान की प्रामाणिक गाथा प्रस्तुत की गई है। जगदीशचंद्र के उपन्यास 'धरती धन न अपना' एवं 'घास गोदाम' में पंजाब के किसानों का चित्रण किया गया है। संजीव द्वारा रचित 'तीस साल का सफरनामा', 'राख', 'जेहि एहि पद का अरथ लगावे' एवं 'दो बीघा जमीन' कहानियों में भारतीय किसान के लिए उसकी जमीन के महत्त्व को दर्शाया गया है। इस प्रकार स्वातंत्र्योत्तर युग के कथा साहित्य में किसानों पर हो रहे अत्याचारों एवं उनकी स्थिति को उजागर करने का प्रयास किया गया है।

सन् 1990 के बाद भूमण्डलीकरण, उदारीकरण और वैश्वीकरण का दौर शुरू हुआ। इन आर्थिक नीतियों ने बाजारवाद को जन्म दिया। बाजारवाद ने मानव जीवन को प्रभावित किया जिससे किसान जीवन सबसे अधिक प्रभावित हुआ। साहित्य समाज का प्रतिबिम्ब होता है इसलिए इसकी स्पष्ट छाप हिन्दी कथा साहित्य पर भी देखने को मिलती है। उदारीकरण ने किसान जीवन में ऐसा परिवर्तन किया जिससे कृषकों की दशा ही बदल गयी। वह रूढ़ियों, परम्पराओं से दूर होता चला गया। किसानों को विस्थापन, बेरोजगारी, नकदी की समस्या, बीज, खाद, जल संकट आदि का सामना करना पड़ा। यहाँ तक कि वह आत्महत्या करने के लिए भी विवश हो गया। इन सभी समस्याओं को लेकर रचनाकारों ने कथा साहित्य की रचना की है। कमलाकांत त्रिपाठी के उपन्यास 'पाहीघर' में सन् 1857 के विप्लव और दमन के बीच अवध की क्रूर ताल्लुकेदारी व्यवस्था का चित्रण किया गया। इनका दूसरा उपन्यास 'बेदखल' भी इसी पृष्ठभूमि से आगे की कड़ी है। वीरेन्द्र जैन के उपन्यास 'डूब' में बुंन्देलखण्ड के कृषक जीवन का चित्रण देखने को मिलता है। विद्यासागर नौटियाल द्वारा रचित 'भीम अकेला' पहाड़ी कृषक जीवन की दशा को उजागर करता है। रामदरश मिश्र के चर्चित उपन्यास 'बीस बरस' में कृषक जीवन का चित्रण किया गया है। जगदम्बा प्रसाद दीक्षित द्वारा रचित 'अकाल' उपन्यास द्वितीय पंचवर्षीय योजना के तहत गाँवों को हाशिए पर धकेलने की आर्थिक नीति पर आधारित है। शिवमूर्ति के उपन्यास 'आखिरी छलांग' में उदारीकरण के द्वारा बर्बाद सीमान्त किसानों का चित्रण किया गया है। राजू

शर्मा का 'हलफनामे' उपन्यास आन्ध्रप्रदेश के किसानों की दुर्व्यवस्था का चित्रण करता है। सुनील चतुर्वेदी द्वारा रचित उपन्यास 'कालीचाट' में नकदी की समस्या, बाजार में बिचौलियों की दलाली, आत्महत्या, खेतों पर बड़ी–बड़ी कम्पनियों के स्थापित हो जाने से किसानों की जमीन छिन जाने आदि समस्याओं को उद्घाटित किया गया है। संजीव द्वारा रचित उपन्यास 'फाँस' में विदर्भ के किसानों की समस्याएँ एवं देश भर में लगभग दो दशकों से बढ़ी किसानों की आत्महत्या की समस्या चित्रित है। इस दुःख भरी दास्तान को पंकज सुबीर का उपन्यास 'अकाल में उत्सव' आगे बढ़ाता है। इसमें किसान जीवन पर बहुत बारीकी से रोशनी डाली गई है। राजकुमार राकेश का 'कंदील' उपन्यास उदारीकरण की समस्या एवं कृषकों के रहन–सहन एवं राजनीतिक षड़यंत्रों पर आधारित है। मिथिलेश्वर का उपन्यास 'तेरा संगी कोई नहीं' भी कृषक जीवन की बुनियादी संरचना एवं कृषि की उपेक्षा पर आधारित है। इस प्रकार इन सभी उपन्यासों में किसानों के जीवन का यथार्थ चित्रण किया गया है।

नब्बे के दशक में रचित हिन्दी कहानियों पर भी उदारीकरण का प्रभाव दिखाई देती है। उदारीकरण के प्रभाव को लेकर हिन्दी में अनेक कहानियाँ लिखी गईं। किसान जीवन पर कैलाश वनवासी की कहानी 'बाजार में रामधन' में बाजारवाद की अनिवार्यता एवं कृषक पर उसके प्रभाव को दर्शाते हुए रूढ़ियों एवं बाजारवाद का उपहास किया गया है। महेश कटारे की कहानी 'फागुन की मौतः बतर्ज़ किस्सा' किसानों पर मौसम की मार के बावजूद उनकी जिजीविषा को व्यक्त करता है। सुमन सिंह की कहानी 'मन–रे–गा' में यह दिखाया गया है कि मनरेगा योजना किसानों का नहीं ग्राम प्रधानों का विकास कर रही है। कृष्णकांत की कहानी 'मुआवजा' में वर्णित है कि पुलिस और प्रशासन के सहयोग से सरकार के पास मुआवजे का फाँस ही किसानों को फँसाने के लिए सबसे आसान तरीका है। जयनन्दन की कहानी 'छोटा किसान' में सीमांत किसानों के उजड़ने की पड़ताल की गई है। प्रहलादचंद्र दास के कहानी संग्रह 'आग ही आग' की कहानियों में बाजारवाद एवं आज के किसान की समस्याओं का जीवंत चित्रण किया गया है। अविनाश झा के कहानी संग्रह 'बटेसर ओझा व अन्य कहानियाँ' में भी भूमण्डलीकरण के दौर में किसान जीवन पर पड़ने वाले बाजारवाद के प्रभाव का चित्रण देखने को मिलता है। मिथलेश 'अकेला' का कहानी

संग्रह 'उल्टी उड़ान' आज के बदलते परिवेश, किसानों के विस्थापन तथा उदारीकरण के दौर में किसानों के हालात को दर्शाता है। ये कहानियाँ किसान जीवन की सच्ची गाथा पर आधारित हैं। इस प्रकार किसान जीवन पर आधारित उपन्यासों और कहानियों में किसानों की मार्मिक दशा अभिव्यक्त की गई है। हिन्दी कथा साहित्य में हाशिए पर खडे कृषक वर्ग की समस्याओं का चित्रण किया गया है जिससे हम किसान जीवन के यथार्थ से परिचित हो सकते हैं।

शोध कार्य की प्रेरणा–

साहित्य समाज का दर्पण है इसलिए समाज में जो भी घटनाएँ घटित होती हैं उन्हें हम साहित्य के माध्यम से जान सकते हैं। साहित्य को जानने–समझने के लिए हमारा संवेदनशील होना अत्यन्त आवश्यक है। हिन्दी कथा साहित्य में चित्रित किसान जीवन को जानने–समझने के लिए ग्रामीण परिवेश, रहन–सहन और किसान जीवन में व्याप्त समस्याओं को जानना आवश्यक है। 'उदारीकरण, हिन्दी कथा साहित्य और किसान जीवन' (सन्दर्भ : 1990 के बाद) पर शोधकार्य करने की प्रेरणा शोधकर्त्री को ग्रामीण परिवेश, वहाँ के रहन–सहन, रीति–रिवाज आदि से प्राप्त हुई क्योंकि शोधकर्त्री का जन्म ग्रामीण परिवेश में ही हुआ इसलिए शोधकर्त्री पर ग्रामीण वातावरण का प्रभाव बाल्यावस्था से ही है। अतः शोधकर्त्री ने किसान जीवन की समस्याओं को नजदीक से देखा एवं महसूस भी किया। शिक्षा प्राप्ति के दौरान शोधकर्त्री को किसानों से सम्बन्धित साहित्य पढ़ने का अवसर मिला तथा गुरुजनों के मार्ग–दर्शन के द्वारा शोधकर्त्री किसान जीवन की समस्याओं से जुड़े कथा साहित्य को भली–भाँति समझ सकी। आज की बदलती परिस्थितियों तथा भूमण्डलीकरण व उदारीकरण से उत्पन्न बाजारवाद की समस्या ने आज के किसान को किस प्रकार प्रभावित किया है– इस विषय से सम्बन्धित साहित्यिक रचनाओं एवं समीक्षात्मक पुस्तकों को पढ़ने के बाद शोधकर्त्री प्रस्तुत विषय पर शोध कार्य करने के लिए प्रेरित हुई।

अन्य शोध कार्य –

विविध विश्वविद्यालयों में अनेक शोधकर्ताओं ने किसान जीवन के अनेक पहलुओं पर शोधकार्य किए है। उनमें से कुछ इस प्रकार हैं–

1. प्रेमचंद और भारतीय किसान– रामबक्ष जाट, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, 1975 ई०

2. हिन्दी उपन्यासों में ग्रामीण संस्कृति– शमा, रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, 1982 ई०

3. स्वातंत्र्योत्तर भारत में ग्रामीण समाज में बदलते मानव सम्बन्ध एवं रेणु के उपन्यास– शुभनारायण सिंह, दिल्ली विश्वविद्यालय 2008 ई०

4. संजीव के उपन्यासों में लोक जीवन–गजुला राजू, हैदराबाद विश्वविद्यालय, 2010 ई०

उपर्युक्त शोध प्रबन्धों में प्रेमचंद के कथा साहित्य में किसान जीवन को दर्शाया गया है, हिन्दी उपन्यासों में ग्रामीण संस्कृति को उजागर किया गया है, फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों में स्वातंत्र्योत्तर भारत में ग्रामीण समाज में बदलते मानव सम्बन्धों तथा संजीव के उपन्यासों में लोक जीवन पर प्रकाश डालते हुए किसानों के जीवन एवं ग्रामीण परिवेश पर शोध कार्य किया गया है। शोधकर्त्री द्वारा चयनित विषय 'उदारीकरण, हिन्दी कथा साहित्य और किसान जीवन' (सन्दर्भः 1990 के बाद) के अन्तर्गत शोधकर्त्री द्वारा भूमण्डलीकरण, निजीकरण, उदारीकरण से उत्पन्न बाजारवाद ने आज के किसान जीवन को किस प्रकार प्रभावित किया है तथा किसान जीवन की समस्याओं को प्रस्तुत शोध के द्वारा उजागर किया जायेगा। किसान जीवन पर उदारीकरण के प्रभाव तथा हिन्दी कथा साहित्य में चित्रित किसान जीवन की समस्याओं को उजागर करने की दृष्टि से भी इस शोध का विशिष्ट महत्त्व है। इस प्रकार शोधकर्त्री द्वारा प्रस्तावित शोध विषय सर्वथा मौलिक एवं नवीन है।

शोध की आवश्यकता एवं महत्त्व –

प्रस्तुत शोध द्वारा समाज के हाशिए पर खड़े किसानों के जीवन को सामने लाया जायेगा। यह शोध किसानों की समस्याओं पर लिखे गये उपन्यासों एवं कहानियों के यथार्थ को उजागर करने की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। सन् 1990 के बाद उदारीकरण आने पर किसान जीवन में किस प्रकार के परिवर्तन आए और उस परिवर्तन को हमारे रचनाकार किस हद तक समझने में सफल हो पाए हैं, इस दृष्टि से इस शोध का अपना विशिष्ट महत्त्व होगा। कृषक जीवन की समस्याओं, जीवन स्तर तथा सामाजिक संस्कृति से हिन्दी साहित्य किस प्रकार प्रभावित हुआ है, इस तथ्य को समझना भी शोध विषय की आवश्यकता होगी।

शोध विषय का उद्देश्य –

प्रस्तावित शोध विषय का मुख्य उद्देश्य हिन्दी कथा साहित्य में चित्रित किसान जीवन का अध्ययन करना है। हिन्दी कथा साहित्य में किसानों के जीवन संघर्ष एवं उनके जीवन में व्याप्त समस्याओं को उजागर भी किया जायेगा। उदारीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से हुए सामाजिक परिवर्तन तथा बाजारवाद ने किसानों की जिजीविषा पर प्रश्नचिह्न लगा दिया है, उन सभी समस्याओं और किसानों की स्थिति को प्रस्तुत शोध के माध्यम से प्रस्तुत किया जायेगा।

शोध कार्य की प्रविधि –

प्रस्तावित शोध कार्य हेतु किसान जीवन पर आधारित हिन्दी कथा साहित्य का गहन अध्ययन, अनुशीलन तथा सन्दर्भ ग्रन्थों के आधार पर समीक्षात्मक अध्ययन किया जाएगा। किसान जीवन के यथार्थ को उजागर करने हेतु वर्णनात्मक, विवरणात्मक एवं विवेचनात्मक पद्धति का उपयोग करते हुए विषय की पड़ताल की जायेगी तथा विषय से सम्बन्धित साहित्यकारों का साक्षात्कार किया जायेगा।

रूपरेखा

उदारीकरण, हिन्दी कथा साहित्य और किसान जीवन (सन्दर्भ : 1990 के बाद)

प्रथम अध्याय –उदारीकरण की अवधारणा और किसान जीवन

1.1 उदारीकरण : अर्थ और सन्दर्भ

1.2 उदारीकरण और समाज के हाशिए के सवाल

1.3 उदारीकरण और किसान त्रासदी के वर्तमान सन्दर्भ

द्वितीय अध्याय – विकास की अवधारणा, विस्थापन की समस्या और किसान–जीवन

2.1 भारत में किसान समस्या एवं आन्दोलन : एक दृष्टि

2.2 किसान समस्या : रचनात्मक साक्ष्य

2.3 किसान जीवन से सम्बन्धित प्रमुख रचनाएँ

तृतीय अध्याय – हिन्दी उपन्यासों में किसान जीवन (सन् 1990 के बाद)

3.1 किसान आत्महत्या

3.2 किसान विस्थापन

3.3 प्राकृतिक आपदाएँ

3.4 ऋण एवं बेकारी

3.5 भूमि अधिग्रहण

3.6 बिचौलियों एवं दलाली की समस्या

3.7 संसाधनों का अभाव

3.8 बाजारवाद का दुष्प्रभाव

3.9 सरकारी योजनाओं का लाभ न मिल पाना

3.10 व्यवस्थागत संकट

चतुर्थ अध्याय – हिन्दी कहानियों में किसान जीवन (सन् 1990 के बाद)

4.1 किसान आत्महत्या

4.2 किसान विस्थापन

4.3 प्राकृतिक आपदाएँ

4.4 ऋण एवं बेकारी

4.5 भूमि अधिग्रहण

4.6 बिचौलियों एवं दलाली की समस्या

4.7 संसाधनों का अभाव

4.8 बाजारवाद का दुष्प्रभाव

4.9 सरकारी योजनाओं का लाभ न मिल पाना

4.10 व्यवस्थागत संकट

पंचम अध्याय –किसान जीवन से सम्बन्धित हिन्दी उपन्यासों एवं कहानियों की शिल्प योजना

5.1 भाषा–शैली

5.2 संवाद योजना

5.3 बिम्ब योजना

5.4 प्रतीक योजना

उपसंहार

परिशिष्ट

1. आधार ग्रन्थ
2. समीक्षात्मक हिन्दी ग्रन्थ
3. समीक्षात्मक अंग्रेजी ग्रन्थ
4. शब्दकोश / विश्वकोश
5. पत्र–पत्रिकाएँ
6. साक्षात्कार

नोट– शोध निर्देशक के सुझाव से अध्याय एवं शोधकार्य में 20 प्रतिशत परिवर्तन सम्भव है।

आधार ग्रन्थ

क्र.सं.	रचनाएँ	रचनाकार	प्रकाशन	वर्ष
1	अकाल	जगदम्बा प्रसाद दीक्षित	राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली	1997
2	अकाल में उत्सव	पंकज सुबीर	शिवानी प्रकाशन, दिल्ली	2016
3	आखिरी छलांग	शिवमूर्ति	नया ज्ञानोदय का जनवरी अंक	2008
4	आग ही आग	प्रहलाद चन्द्र दास	रश्मि प्रकाशन, लखनऊ	2017
5	उल्टी उड़ान	मिथिलेश अकेला	रश्मि प्रकाशन, लखनऊ	2019
6	कंदील	राजकुमार राकेश	आधार प्रकाशन, दिल्ली	2016
7	कालीचाट	सुनील चतुर्वेदी	अंकिता प्रकाशन	2015
8	छोटा किसान	जयनंदन	कथादेश, मई	2012
9	जमीन से रिश्ता	पराग मांदले	कथादेश, मई	2012
10	जहरीली रोशनियों के बीच	मदन मोहन	कथादेश, मई	2012
11	डूब	वीरेन्द्र जैन	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली	2014
12	तेरा संगी कोई नहीं	मिथलेश्वर	लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद	2018
13	पाहीघर	कमलाकान्त त्रिपाठी	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	1995
14	फागुन की मौतः बतर्ज किस्सा	महेश कटारे	नया ज्ञानोदय, नई दिल्ली	2012
15	फँास	संजीव	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली	2015
16	बटेसर ओझा और अन्य कहानियाँ	अविनाश झा	रश्मि प्रकाशन, लखनऊ	2019
17	बाजार में रामधन	कैलाश वनबासी	भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली	2004

18	बीस बरस	रामदरश मिश्र	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली	2012
19	बेदखल	कमलाकांत त्रिपाठी	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली	1997
20	भीम अकेला	विद्यासागर नौटियाल	पेंगुइन प्रकाशन, हरियाणा	2008
21	मन–रे–गा	सुमन कुमार सिंह	कथादेश, मई	2012
22	मुआवजा	हरभगवान चावला	कथादेश, मई	2012
23	हलफनामे	राजू शर्मा	राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली	2006

संदर्भ ग्रंथ

क्र.सं.	**रचनाएँ**	**रचनाकार**	**प्रकाशन**	**वर्ष**
1	आजादी के दस्तावेज भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन	सुभाष चंद्र बोस, कैलाशचंद्र जैन	स्वर्ण जयंती प्रकाशन	1998
2	आर्थिक सुधार और सामाजिक अपवर्जन	के०एस० चलम	सेज पब्लिकेशन, नई दिल्ली	2017
3	आधुनिकता और हिन्दी उपन्यास	इन्द्रनाथमदान	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	2013
4	उदारीकरण की तानाशाही	प्रेम सिंह	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	2008
5	उदारीकरण और विकास का सच	उर्मिलेश	अनामिका पब्लिशर्स, नई दिल्ली	2010
6	पं० जवाहरलाल नेहरू और किसान वर्ग (1920 से 1947)	रवीन्द्र कुमार	सारा पब्लिकेशन, अहमदाबाद	1996

7	प्रेमचंद और भारतीय किसान	प्रो० रामवक्ष	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली	1982
8	भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन	विपिन चन्द्रा	अनामिका प्रकाशन, दिल्ली	1998
9	भारत में अंग्रेजी राज और मार्क्सवाद	रामविलास शर्मा	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	2009
10	भूमण्डलीकरण और हिन्दी उपन्यास	पुष्पपाल सिंह	राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली	2012
11	मानव मूल्य और स्वातंत्र्योत्तर उपन्यास	बलराज सिंहमार	खामा पब्लिकेशन, दिल्ली	2002

पत्र पत्रिकाएँ

1. 'कथादेश' नई दिल्ली, मई अंक 2012
2. 'जनमत' पत्रिका का जनवरी अंक कर्नलगंज इलाहाबाद, 2006
3. 'नया ज्ञानोदय' दिल्ली 2012
4. 'माटी' ई–पत्रिका, अप्रैल–मई, 2017
5. 'लमही' पत्रिका जनवरी–मार्च का अंक, लखनऊ, 2014